अभिनवगुप्त
का
रस सिद्धांत

एम्.ए – II सेमेस्टर

डॉ उमा शर्मा
अध्यक्षा, संस्कृत विभाग
एन.ए.एस डिग्री कॉलेज, मेरठ

1

1. अभिनवगुप्त का रस-सिद्धांत

रस-सूत्र के सर्वश्रेष्ठ व्याख्याकार आचार्य अभिनवगुप्त है उनकी व्याख्या ही बाद के आचार्यों द्वारा स्वीकृत हुई है। उनके मतानुसार स्थायी-भाव का विभाव आदि के साथ व्यङ्ग्यव्यञ्जक-भाव-रूप संयोग होने से रस की अभिव्यक्ति (निष्पत्ति) होती है इसी हेतु उनका मत रस-व्यक्तिवाद नाम से विख्यात है।

2) लोके सामाजिकानां वासनात्मकतया स्थितः स्थायी -

सामाजिक के हृदय में संस्कार रूप से, सूक्ष्मरूप स्थित रति आदि स्थायी भाव होते है वासनारूप से स्थित स्थायी भाव भी उन्ही सामाजिकों मे सम्यक् अभिव्यक्त होता है। जिन्होंने लौकिक जीवन मे ललना, उद्यान और कटाक्ष आदि की द्वारा रति आदि की बार-2 अनुमिति की है और उसमें निपुणता प्राप्त कर ली है।

काव्ये नाट्ये च, तैरेव अलौकिक विभावादिशब्दव्यवहार्ये साधारण्येन प्रतीतैः अभिव्यक्तः

काव्य - नाट्य में भी सहृदयों के हृदय में कहीं प्रमदा आदि को द्वारा रति आदि स्थायी भाव की अभिव्यक्ति हुआ करती है किंतु काव्य की अलौकिक शक्ति द्वारा काव्य - नाट्य की क्षेत्र में प्रमदा आदि रत्यादि स्थायी भाव को कारण, कार्य और सहकारी नहीं कहे जाते अपितु विभाव, अनुभाव और सञ्चारी भाव नाम अलौकिक शब्दों द्वारा इनका व्यवहार किया जाता है।

विभावना का अर्थ है - स्वरूप रत्यादि में आस्वादयोग्यता का आविर्भाव कराना। इसी व्यापार को कारण वस्तु आदि विभाव कहलाते हैं। इसी प्रकार रत्यादि भावों को अनुभव का विषय कराने वाले अनुभाव हैं तथा विशेष रूप से रत्यादि भावों का संचारण करने वाले सञ्चारी या व्यभिचारी भाव हैं।

काव्य की इसी अलौकिक आभिव्यञ्जना शक्ति के कारण विभावादि का साधारणीकरण हो जाता है। बात यह है कि लोक - जीवन में तीन प्रकार की वस्तुएँ हैं - कुछ अपनी हैं, कुछ शत्रु की ही हैं तथा कुछ तटस्थ या उदासीन की हैं। काव्य - नाट्य में सहृदय जन विभावादि के साथ इन तीनों संबंधों में से किसी एक का भी अनुभव नहीं करते।

यदि उन्हें विभाव आदि स्वकीय प्रतीत होने लगें तो अन्य लोगों के समक्ष अपनी रति आदि को प्रकट करने से लज्जा का अनुभव होगा। रसास्वाद नहीं।

शत्रु संबंधी विभावादि हैं, ऐसा अनुभव करने पर द्वेषभाव जागरित होगा तथा उन विभावादि को उदासीन - संबंधी जानकर भी उपेक्षा ही हो सकती है। अतस्व संबंधविशेष की स्वप्रतीति का निश्चय नहीं हो पाता।

यदि ऐसा हो जाता तो ये विभावादि किसी के न रहते, गगनकुसुमवत् हो जाते।

काव्य - नाट्य में कला की अलौकिकता के कारण एक विलक्षण प्रतीति होती है ~~अर्थात्~~ इस प्रकार कामिनीत्वादि रूप से सीता आदि की प्रतीति हो जाया करती है, शृंगार आदि रस के आलम्बन विभाव आदि के रूप में सीता आदि की प्रतीति होती है और इस प्रतीति द्वारा सहृदयों के हृदय में रत्यादिभाव की आभिव्यक्ति हो जाया करती है।

5) यहाँ यह शङ्का हो सकती है

रति आदि भावों की समस्त सहृदय जनों को साधारणतया प्रतीति कैसी हो सकती है?

इसका समाधान करते हुए कहा गया है कि विभावादि जो रत्यादि की अभिव्यक्ति के उपाय हैं काव्य - नाट्य में उनका साधारणीकरण हो जाता है

रति आदि भाव के इस साधारणीकरण को समस्त सहृदय जन ही अनुभव किया करते हैं

४) **स्वाकार इव — चर्व्यमाण:** — रति आदि भाव रस है। उस रस का स्वरूप केवल आस्वादनमात्र ही है वस्तुत: आस्वादन से भिन्न आस्वाद्य वहाँ नहीं होता। और वह आस्वादन (चर्वणा) तभी तक होता है जब तक कि विभाव आदि रहते हैं विभावादि के अभाव में उसका आस्वादन नहीं होता। किन्तु विभावादि की प्रतीति पृथक रूप से नहीं होती अपितु एक अखण्डात्मक रस की ही प्रतीति होती है

जैसे - इलायची, कालीमिर्च, मिश्री, केसर तथा कपूर आदि के मिश्रण से जो पानक (आम का पन्ना) नामक पेय पदार्थ बनता है उसका रस उन समस्त वस्तुओं से विलक्षण होता है। इसी प्रकार विभावादि से विलक्षण अलौकिक रूप में ही रस का आस्वादन होता है

5

पुर इव श्रृङ्गारादिको रस :-

काव्य - नाट्य के द्वारा आस्वाद्यमान रस विलक्षण होता है यह चित्त का विस्तार करता है और उसे एक अनूठी अवस्था में ले जाता है जिसे चमत्कारित्व कह सकते है, अर्थात यह लौकिक सुखों से विलक्षण एक अलौकिक आनंद है।

अपने रस के अतिरिक्त अन्य समस्त संसार को आच्छादित सा कर रहा हो तथा ब्रह्मज्ञान का आनंद अनुभव करा रहा है।

अभिनवगुप्त के मत का सार

सहृदयों के हृदय में रति आदि भाव संस्कार रूप से विद्यमान होते है वे सहृदय जन लोक में ललना आदि कारणों के द्वारा रति आदि का अनुमान करने मे निपुण होते है काव्य - नाट्य मे कारणादि को त्यागकर वे ललनादि अलौकिक विभाव आदि का रूप धारण कर लेते है तथा काव्य की शक्ति से सामान्य विभावादि के रूप में प्रतीत होने लगते है सहृदयों मे स्थित रति आदि भाव इन्हीं के द्वारा व्यञ्जना से अभिव्यक्त होकर आस्वादित किया जाता है इस प्रकार का विलक्षण आस्वाद ही रस कहलाता है